अमरावती-रुक्मिणी नगर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ के पुनर्निर्मित सुख शांति भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई,मा.आबू। कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. गीता बहन, राजयोगिनी ब्र.कु. सीता दीदी, श्रीमति नवनीत कौर राणा,सांसद, रवि भाऊ राणा,विधायक,बडनेरा, श्रीमति पवनीत कौर,जिलाधिकारी, प्रशांत रोडे,आयुक्त,महानगर पालिका, हेमंत पवार,आयुक्त,महानगर पालिका,नागपुर, लप्पीभैया जाजोदिया,प्रसिद्ध उद्योजक एवं समाज सेवक आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

शांतिवन। कॉमनवेल्थ वोकेशनल युनिवर्सिटी द्वारा राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर, सम्पादक ओम शान्ति मीडिया को प्राप्त मानद डॉक्टरेट डिग्री, मीडिया ट्रेनिंग के दौरान उन्हें देते हुए राजयोगी ब्र.कु. करुणा, राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश तथा राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय।

जब अंतर के पट खुलें तब ही परमात्मा से नाता जुड़े

अब सवाल ये उठता है कि अन्तर के पट खुले कैसे? क्या है ये अंतर्मन? आखिर कौन खोलेगा अंतर्मन के पट? जिसके खुलने से हम परमात्मा की प्राप्ति कर सकते हैं। हर व्यक्ति को परमात्मा की ही तलाश क्यों? क्योंकि वो खुद की और खुदा की पहचान खो चुके हैं जिससे वो दुःखी और अशान्त हैं, हताश हैं परंतु वो ये भी अच्छे से जानते हैं कि एक मात्र परमात्मा ही है जो मानव मात्र का व सृष्टि मात्र का कल्याण कर सकते हैं। उनकी सारी परेशानियों को, उनके सवालों को हल कर सकते हैं।

किन्तु परमात्मा है कौन? मैं असल में कौन हूँ? इससे अनजान हैं। जिस प्रकार अगर हम किसी व्यक्ति के बारे में जानना चाहते हैं तो या तो हम उस व्यक्ति के पास जाएंगे या उसके माता-पिता के पास क्योंकि उनसे बेहतर शायद ही उन्हें कोई जानता हो।

इसी प्रकार स्वयं परमात्मा जिनका नाम शिव है इनके और भी कई नाम हैं जो मनुष्यों ने अपनी भावना अनुसार रखे हैं किंतु परमात्मा स्वयं अपना परिचय संगम युग पर

आ कर बताते हैं अब आप सोच रहे होंगे ये संगमयुग क्या है संगम युग यानी कलयुग(रात्रि) सतयुग(भोर) के बीच का समय है जिसमें स्वयं परमात्मा(शिव) ज्ञान रुपी मशाल लेकर भटकी हुई मनुष्य आत्माओं को रास्ता दिखाते हैं।

परमात्मा कहते हैं मीठे बच्चों आप इस अंधकार रुपी रात्रि से डरो मत। अब मैं स्वयं तुम्हारा पिता परमात्मा ज्योतिस्वरुप तुम्हारी ज्योति जगाने आ गया हूँ। मैं तुम्हारे अज्ञान रुपी सारे पट खोल तुम्हें तुमसे ही मिलाने आया हूँ। तुम मेरी ही संतान हो जैसे मैं ज्योति स्वरुप हूँ तत्वम, मैं ज्ञान स्वरुप हूँ तत्वम, मैं आनंद स्वरुप हूँ तुम भी हो, मैं परमधाम निवासी हूँ तत्वम, किन्तु तुम पार्ट बजाने सृष्टि मंच पर आते हो मैं नहीं आता, सृष्टि रंग मंच पर पार्ट बजाते-बजाते तुमने अपनी पहचान खो दी है, तुमने अपने दिव्य चक्षु खो दिए हैं, तुम्हारे अंतर मन के कपाट बंद हो चुके हैं जिस कारण तुम भटक गए हो, तुम अपने मूल्यों को खो चुके हो इससे तुम अत्यंत दुःखी हो।

इसलिए हे वत्स आओ और अपना अधिकार ले लो, अपने पिता की विरासत(सुख, शांति, प्रेम, पवित्रता, आनंद ...) को अब सँभालो, अपने अंतर्मन के पट खोलो और अपने पिता से नाता जोड़ लो।

उदयपुर-राज.। कलेक्टरेट में नवनियुक्त कलेक्टर तारा चंद मीणा का स्वागत करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीटा दीदी।

समस्तीपुर-बिहार। विश्व शान्ति दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश दशरथ मिश्र। मंचासीन हैं ब्र.कु. सविता बहन, महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमति अनुजा अग्रवाल तथा ब्र.कु. कृष्ण भाई।

पुणे-रविवार पेठ(महाराष्ट्र)। स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित ब्र.कु. रोहिणी बहन को सम्मानित करते हुए स्कूल के ट्रस्टी अग्रवाल सर। साथ हैं बायें से ब्र.कु. अमृता, स्कूल की प्रिन्सीपल रोहिणी सूर्यवंशी, प्रिन्सीपल अश्विनी रोखड़े तथा अन्य।

गोपालगंज-बिहार। थाना प्रभारी को शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. अनिता बहन।

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में नगर निगम वार्ड 44 में कार्यरत सभी सफाई कर्मचारियों को सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन। इस मौके पर ब्र.कु. रोशनी बहन, ब्र.कु. विजेन्द्र भाई, वार्ड मॉनिटर बी.के. गुप्ता, दिलीप चौहान, वींकेश बागडे,एस.आई., लोकेन्द्र चिंडालिया,डब्ल्यू.एच.ओ., गोपाल जी आदि उपस्थित रहे।

विरमगम-गुज.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा एपीएमसी मार्केट में कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें मार्केट के चेयरमैन लखुभाई, डायरेक्टर दयाल भाई पटेल, किसान भाई, ब्र.कु. धर्मिष्ठा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे। इसके अंतर्गत दौलतपुर गांव में आयोजित कार्यक्रम में सरपंच रसिक भाई पटेल तथा किसान उपस्थित रहे एवं भोजवा गांव में आयोजित कार्यक्रम में सहकारी मंडली चेयरमैन मनुभाई दरबार तथा किसान भाई-बहनें उपस्थित रहे।

मुरली का महत्त्व

समय जा रहा... हे आत्माओं, मुरली सुन लो।।
समय हो गया, मीठे बच्चों, मुरली सुन लो।।
बाबा बुला रहे हैं बच्चों, मुरली सुन लो।।
ये दिन भी याद करोगे, बच्चों मुरली सुन लो।।
अब नहीं तो कब नहीं, तुम मुरली सुन लो।।
अतीन्द्रिय सुख पाना है तो, मुरली सुन लो।।
श्रीमत का पालन करना है तो, मुरली सुन लो।।
बहुत गई थोड़ी रही, अब मुरली सुन लो।।
हज़ार काम को छोड़ो, पहले मुरली सुन लो।।
संगमयुग है ब्राह्मण बच्चों, मुरली सुन लो।।
शान्ति और धीरज धारण कर, मुरली सुन लो।।
बीती को बिन्दी लगाकर, मुरली सुन लो।।
अनमोल समय की कदर करो, मुरली सुन लो।।
मित्र-संबंधी याद न आये, मुरली सुन लो।।
इधर-उधर ना देखो, बच्चों मुरली सुन लो।।
आँखें खोलो, सुस्ती छोड़ो, मुरली सुन लो।।
नींद, उबासी त्याग पहले, मुरली सुन लो।।
हीरे-रत्नों की खान है, तुम मुरली सुन लो।।
लाख-लाख का एक रत्न है, मुरली सुन लो।।
बीमार अगर हो, लेटे-लेटे मुरली सुन लो।।
व्हील चेयर पर बैठे-बैठे, मुरली सुन लो।।
अपने पर आशीर्वाद करो, तुम मुरली सुन लो।।
खूब दुआयें लेनी हैं तो मुरली सुन लो।।
बाबा, दादी की आज्ञा पहले, मुरली सुन लो।।
बाबा की दाढ़ी की लाज, मुरली सुन लो।।
अगर पहनना गोल्डन ताज मुरली सुन लो।।
छोड़ो सारे लोकलाज, पर मुरली सुन लो।।
पास विद् ऑनर बनना है तो, मुरली सुन लो।।
फरिश्ता बनकर उड़ना है तो, मुरली सुन लो।।
अच्छा भाषण करना है तो, मुरली सुन लो।।
रुहानी रेस करनी है तो, मुरली सुन लो।।
आत्मा की प्यास बुझानी है तो, मुरली सुन लो।।
कर्मातीत बनना है तो, मुरली सुन लो।।
कदम-कदम में पदम कमाई, मुरली सुन लो।।
बाबा की आँखों के नूर, मुरली सुन लो।।
बाबा कर रहे इंतज़ार, मुरली सुन लो।।
सिकीलधे बच्चे, तुम मुरली सुन लो।।
ब्रह्मा बाप से प्यार है तो, मुरली सुन लो।।
परमधाम से बाबा आते, मुरली सुन लो।।
समय हो गया मीठे बच्चों, मुरली सुन लो।।

ब्र.कु. सत्यनारायण,ज्ञानसरोवर